

سُورَةُ الْكَهْفِ

Surah 18 — Al-Kahf (The Cave) • Meccan • 110 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا

हर तरह की तारीफ खुदा ही को (सज़ावार) है जिसने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर किताब (कुरान) नाज़िल की और उसमें किसी तरह की कज़ी (ख़राबी) न रखी

2

قَيِّمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا لِّمَنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا

बल्कि हर तरह से सधा ताकि जो सख्त अज़ाब खुदा की बारगाह से काफ़िरों पर नाज़िल होने वाला है उससे लोगों को डराए और जिन मोमिनीन ने अच्छे अच्छे काम किए हैं उनको इस बात की खुशख़बरी दे की उनके लिए बहुत अच्छा अज़्र (व सवाब) मौजूद है

3

مُكْتَبِينَ فِيهِ أَبَدًا

जिसमें वह हमेशा (बाइत्मेनान) तमाम रहेंगे

4

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا

और जो लोग इसके काएल हैं कि खुदा औलाद रखता है उनको (अज़ाब से) डराओ

5

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا

न तो उन्हीं को उसकी कुछ खबर है और न उनके बाप दादाओं ही को थी (ये) बड़ी सख्त बात है जो उनके मुँह से निकलती है ये लोग झूठ मूठ के सिवा (कुछ और) बोलते ही नहीं

6

فَلَعَلَّكَ بُخْعٌ ۖ نَفْسَكَ عَلَىٰ ءَاثَرِهِمْ إِن لَّمْ يُؤْمِنُوا ۖ بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا

तो (ऐ रसूल) अगर ये लोग इस बात को न माने तो यायद तुम मारे अफसोस के उनके पीछे अपनी जान दे डालोगे

7

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً ۖ لَّهَا لِنَبْلُوهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۖ

और जो कुछ रुए ज़मीन पर है हमने उसकी ज़ीनत (रौनक) करार दी ताकि हम लोगों का इम्तिहान लें कि उनमें से कौन सबसे अच्छा चलन का है

8

وَإِنَّا لَجُعَلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا ۖ جُرُزًا

और (फिर) हम एक न एक दिन जो कुछ भी इस पर है (सबको मिटा करके) चटियल मैदान बना देंगे

9

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا ۖ مِنْ ءَايَاتِنَا عَجَبًا

(ऐ रसूल) क्या तुम ये ख्याल करते हो कि असहाब कहफ व रक्कीम (खोह) और (तख्ती वाले) हमारी (कुदरत की) निशानियों में से एक अजीब (निशानी) थे

10

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا ۖ رَبَّنَا ءَاتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۖ وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۖ

कि एक बारगी कुछ जवान ग़ार में आ पहुँचे और दुआ की-ऐ हमारे परवरदिगार हमें अपनी बारगाह से रहमत अता फरमा-और हमारे वास्ते हमारे काम में कामयाबी इनायत कर

11

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ ءَاذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۖ

तब हमने कई बरस तक ग़ार में उनके कानों पर पर्दे डाल दिए (उन्हें सुला दिया)

12

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحَزِينِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا ۖ أَمَدًا ۖ

फिर हमने उन्हें चौकाया ताकि हम देखें कि दो गिरोहों में से किसी को (ग़ार में) ठहरने की मुद्दत खूब याद है

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ ءَامَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۚ

(ऐ रसूल) अब हम उनका हाल तुमसे बिल्कुल ठीक तहकीकातन (यक्रीन के साथ) बयान करते हैं वह चन्द जवान थे कि अपने (सच्चे) परवरदिगार पर ईमान लाए थे और हम ने उनकी सोच समझ और ज्यादा कर दी है

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا ۖ فَقَالُوا ۖ رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَن نَدْعُوهُ ۚ
مِنْ دُونِهِ ۚ إِلَٰهًا ۚ لَقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا

और हमने उनकी दिलों पर (सब्र व इस्तेक़लाल की) गिराह लगा दी (कि जब दक्रियानूस बादशाह ने कुफ्र पर मजबूर किया) तो उठ खड़े हुए (और बे ताम्मुल (खटके)) कहने लगे हमारा परवरदिगार तो बस सारे आसमान व ज़मीन का मालिक है हम तो उसके सिवा किसी माबूद की हरगिज़ इबादत न करेंगे

هُوَ لَا يَأْتِيهِمْ بِسُلْطٰنٍ ۚ بَيْنَ ۚ ۚ
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ

अगर हम ऐसा करे तो यक्रीनन हमने अक़ल से दूर की बात कही (अफसोस एक) ये हमारी क़ौम के लोग हैं कि जिन्होंने खुदा को छोड़कर (दूसरे) माबूद बनाए हैं (फिर) ये लोग उनके (माबूद होने) की कोई सरीही (खुली) दलील क्यों नहीं पेश करते और जो शरूष खुदा पर झूट बोहतान बाँधे उससे ज्यादा ज़ालिम और कौन होगा

وَإِذْ أَعْتٰزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوْ۟ا ۚ إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّن رَّحْمَتِهِ ۚ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ أَمْرِكُمْ مَّرْفَقًا ۚ

(फिर बाहम कहने लगे कि) जब तुमने उन लोगों से और खुदा के सिवा जिन माबूदों की ये लोग परसतिश करते हैं उनसे किनारा कशी करली तो चलो (फलों) शार में जा बैठो और तुम्हारा परवरदिगार अपनी रहमत तुम पर वसीह कर देगा और तुम्हारा काम में तुम्हारे लिए आसानी के सामान मुहय्या करेगा

﴿ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ ﴾ ۞ ﴿ مِنْهُ ﴾ ذَلِكُمْ مِنْ ءَايَاتِ اللَّهِ ۞ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۞ وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا ۞ ا مَرْشِدًا ۞ ا

(गरज ये ठान कर गार में जा पहुँचे) कि जब सूरज निकलता है तो देखेगा कि वह उनके गार से दाहिनी तरफ झुक कर निकलता है और जब गुरुब (डुबता) होता है तो उनसे बायीं तरफ कतरा जाता है और वह लोग (मजे से) गार के अन्दर एक वसीइ (बड़ी) जगह में (लेटे) हैं ये खुदा (की कुदरत) की निशानियों में से (एक निशानी) है जिसको हिदायत करे वही हिदायत याफता है और जिस को गुमराह करे तो फिर उसका कोई सरपरस्त रहनुमा हरगिज़ न पाओगे

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا ۞ وَهُمْ رُقُودٌ ۞ ﴿ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۞ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ۞ ذِرَاعِيهِ بِالْوَصِيدِ ۞ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا ۞ ا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعبًا ۞ ا

तू उनको समझेगा कि वह जागते हैं हालाँकि वह (गहरी नींद में) सो रहे हैं और हम कभी दाहिनी तरफ और कभी बायीं तरफ उनकी करवट बदलवा देते हैं और उनका कुत्ता अपने आगे के दोनो पाँव फैलाए चौखट पर डटा बैठा है (उनकी ये हालत है कि) अगर कहीं तू उनको झाक कर देखे तो उलटे पाँव ज़रूर भाग खड़े हो और तेरे दिल में दहशत समा जाए

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا ۞ بَيْنَهُمْ ۞ قَالَ قَائِلٌ ۞ مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۞ قَالُوا ۞ لَبِثْنَا يَوْمًا ۞ أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۞ ۞ قَالُوا ۞ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا ۞ أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ ۞ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا ۞ ا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ ۞ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۞ ا

और (जिस तरह अपनी कुदरत से उनको सुलाया) उसी तरह (अपनी कुदरत से) उनको (जगा) उठाया ताकि आपस में कुछ पूछ गच्छ करें (गरज) उनमें एक बोलने वाला बोल उठा कि (भई आखिर इस गार में) तुम कितनी मुद्दत ठहरे कहने लगे (अरे ठहरे क्या बस) एक दिन से भी कम उसके बाद कहने लगे कि जितनी देर तुम गार में ठहरे उसको तुम्हारे परवरदिगार ही (कुछ तुम से) बेहतर जानता है (अच्छा) तो अब अपने में से किसी को अपना ये रुपया देकर शहर की तरफ भेजो तो वह (जाकर) देखभाल ले कि वहाँ कौन सा खाना बहुत अच्छा है फिर उसमें से (जरूरत भर) खाना तुम्हारे वास्ते ले आए और उसे चाहिए कि वह आहिस्ता चुपके से आ जाए और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا ۚ عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا ۚ إِذَا أَبَدًا ۚ ا

इसमें शक नहीं कि अगर उन लोगों को तुम्हारी इत्तेलाअ हो गई तो बस फिर तुम को संगसार ही कर देंगे या फिर तुम को अपने दीन की तरफ फेर कर ले जाएँगे और अगर ऐसा हुआ तो फिर तुम कभी कामयाब न होगे

وَكَذَلِكَ أَغْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا ۚ أَنْ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَزَّعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ ۚ فَقَالُوا ۚ أَبْنُؤَا ۚ عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۚ ا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا ۚ عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۚ ا

और हमने यूँ उनकी क्रौम के लोगों को उनकी हालत पर इत्तेलाअ (खबर) कराई ताकि वह लोग देख लें कि खुदा को वायदा यकीनन सच्चा है और ये (भी समझ लें) कि क़यामत (के आने) में कुछ भी शुबहा नहीं अब (इत्तिलाआ होने के बाद) उनके बारे में लोग बाहम झगड़ने लगे तो कुछ लोगों ने कहा कि उनके (ग़ार) पर (बतौर यादगार) कोई इमारत बना दो उनका परवरदिगार तो उनके हाल से खूब वाक़िफ है ही और उनके बारे में जिन (मोमिनीन) की राए ग़ालिब रही उन्होंने कहा कि हम तो उन (के ग़ार) पर एक मस्जिद बनाएँगे

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ ۚ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ ۚ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا ۚ ا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ ۚ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ ا فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ۚ ا ظَهَرَ ۚ ا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۚ ا

क़रीब है कि लोग (नुसैरे नज़रान) कहेंगे कि वह तीन आदमी थे चौथा उनका कुत्ता (क़तमीर) है और कुछ लोग (आक़िब वग़ैरह) कहते हैं कि वह पाँच आदमी थे छठा उनका कुत्ता है (ये सब) ग़ैब में अटकल लगाते हैं और कुछ लोग कहते हैं कि सात आदमी हैं और आठवाँ उनका कुत्ता है (ऐ रसूल) तुम कह दो की उनका सुमार मेरा परवरदिगार ही ख़ब जानता है उन (की गिनती) के थोड़े ही लोग जानते हैं तो (ऐ रसूल) तुम (उन लोगों से) असहाब कहफ के बारे में सरसरी गुफ्तगू के सिवा (ज्यादा) न झगड़ों और उनके बारे में उन लोगों से किसी से कुछ पूछ ग़छ नहीं

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَا ۚ ا إِنِّي فَاعِلٌ ۚ ا ذَلِكَ غَدًا

और किसी काम की निस्वत न कहा करो कि मैं इसको कल करूँगा

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنِي رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَذَا رَشَدًا ۝۱

मगर इन्शा अल्लाह कह कर और अगर (इन्शा अल्लाह कहना) भूल जाओ तो (जब याद आए) अपने परवरदिगार को याद कर लो (इन्शा अल्लाह कह लो) और कहो कि उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे ऐसी बात की हिदायत फरमाए जो रहनुमाई में उससे भी ज्यादा करीब हो

وَلَبِثُوا ۚ فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ ۙ سِنِينَ وَازْدَادُوا ۚ تِسْعًا ۝۲

और असहाब कहफ अपने ग़ार में नौ ऊपर तीन सौ बरस रहे

قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۚ ۝۳ لَهُ ۚ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ أَبْصِرْ بِهِ ۚ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ ۚ أَحَدًا ۝۴

(ऐ रसूल) अगर वह लोग इस पर भी न मानें तो तुम कह दो कि खुदा उनके ठहरने की मुद्दत से बखूबी वाक़िफ है सारे आसमान और ज़मीन का ग़ैब उसी के वास्ते ख़ास है (अल्लाह हो अकबर) वो कैसा देखने वाला क्या ही सुनने वाला है उसके सिवा उन लोगों का कोई सरपरस्त नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को अपना दखील (शरीक) नहीं बनाता

وَأْتِلْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِهِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ ۚ مُلتَحَدًا ۝۵

और (ऐ रसूल) जो किताब तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वही के ज़रिए से नाज़िल हुई है उसको पढ़ा करो उसकी बातों को कोई बदल नहीं सकता और तुम उसके सिवा कहीं कोई हरगिज़ पनाह की जगह (भी) न पाओगे

وَأَصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ؟ ۚ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ؟ ۚ عَن ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ؟ ۚ فُرُطًا ۚ

और (ऐ रसूल) जो लोग अपने परवरदिगार को सुबह सवेरे और झटपट वक्त शाम को याद करते हैं और उसकी खुशनूदी के स्वाहा हैं उनके उनके साथ तुम खुद (भी) अपने नफस पर जबर करो और उनकी तरफ से अपनी नज़र (तवज्जो) न फेरो कि तुम दुनिया में ज़िन्दगी की आराइश चाहने लगो और जिसके दिल को हमने (गोया खुद) अपने ज़िक्र से शाफिल कर दिया है और वह अपनी स्वाहिशे नफसानी के पीछे पड़ा है और उसका काम सरासर ज्यादाती है उसका कहना हरगिज़ न मानना

وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۚ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَن شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا ۚ يُغَاثُوا؟ ۚ بِمَاءٍ ۚ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا

और (ऐ रसूल) तुम कह दो कि सच्ची बात (कलमए तौहीद) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (नाज़िल हो चुकी है) बस जो चाहे माने और जो चाहे न माने (मगर) हमने ज़ालिमों के लिए वह आग (दहका के) तैयार कर रखी है जिसकी क़नाते उन्हें घेर लेगी और अगर वह लोग दोहाई करेंगे तो उनकी फरियाद रसी खौलते हुए पानी से की जाएगी जो मसलन पिघले हुए ताबें की तरह होगा (और) वह मुँह को भून डालेगा क्या बुरा पानी है और (जहन्नुम भी) क्या बुरी जगह है

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम करते रहे तो हम हरगिज़ अच्छे काम वालों के अज़्र को अकारत नहीं करते

أَوَلَيْكَ لَهُمْ جَنَّتُ عَدْنٍ ۚ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ ۚ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا ۚ مِنْ سُنْدُسٍ ۚ وَإِسْتَبْرَقٍ ۚ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعَمَ الثَّوَابِ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۚ

ये वही लोग हैं जिनके (रहने सहने के) लिए सदाबहार (बेहश्त के) बाग़ात हैं उनके (मकानात के) नीचे नहरें जारी होगीं वह उन बाग़ात में दमकते हुए कुन्दन के कंगन से सँवारे जाँएंगे और उन्हें बारीक रेशम (क्रेब) और दबीज़ रेशम (वाफते) के धानी जोड़े पहनाए जाएँगे और तख्तों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे क्या ही अच्छा बदला है और (बेहश्त भी आसाइश की) कैसी अच्छी जगह है

ۚ وَأَضْرَبَ لَهُمْ مَثَلًا ۚ رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أُعْنَبٍ ۚ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ ۚ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۚ

और (ऐ रसूल) इन लोगों से उन दो शरूषों की मिसाल बयान करो कि उनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दे रखे हैं और हमने चारों ओर खजूर के पेड़ लगा दिये हैं और उन दोनों बाग़ के दरमियान खेती भी लगाई है

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ ءَاتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِم مِّنْهُ شَيْءًا ۚ أَنَا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَّاهُمَا نَهْرًا ۚ

वह दोनों बाग़ खूब फल लाए और फल लाने में कुछ कमी नहीं की और हमने उन दोनों बाग़ों के दरमियान नहर भी जारी कर दी है

وَكَانَ لَهُ ۚ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِسُحْبِهِ ۚ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ ۚ أَنَا ۚ أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا ۚ وَأَعَزُّ نَفَرًا ۚ

और उसे फल मिला तो अपने साथी से जो उससे बातें कर रहा था बोल उठा कि मैं तो तुझसे माल में (भी) ज्यादा हूँ और जत्थे में भी बढ़ कर हूँ

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ ۚ وَهُوَ ظَالِمٌ ۚ لِّنَفْسِهِ ۚ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ ۚ أَبَدًا ۚ

और ये बातें करता हुआ अपने बाग़ में भी जा पहुँचा हालाँकि उसकी आदत ये थी कि (कुफ़्र की वजह से) अपने ऊपर आप ज़ुल्म कर रहा था (गरज़ वह कह बैठा) कि मुझे तो इसका गुमान नहीं तो कि कभी भी ये बाग़ उजड़ जाए

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۚ وَلَئِنْ رُدِدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا ۚ ا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۚ

और मैं तो ये भी नहीं ख्याल करता कि क़यामत क़ायम होगी और (बिलग़रज़ हुई भी तो) जब मैं अपने परवरदिगार की तरफ लौटाया जाऊँगा तो यकीनन इससे कहीं अच्छी जगह पाऊँगा

قَالَ لَهُ ۚ صَاحِبُهُ ۚ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ ۚ أَكْفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ۚ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ۚ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ۚ

उसका साथी जो उससे बातें कर रहा था कहने लगा कि क्या तू उस परवरदिगार का मुन्किर है जिसने (पहले) तुझे मिट्टी से पैदा किया फिर नुत्फे से फिर तुझे बिल्कुल ठीक मर्द (आदमी) बना दिया

لُكِنَّا ۚ هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ۚ

हम तो (कहते हैं कि) वही खुदा मेरा परवरदिगार है और मैं तो अपने परवरदिगार का किसी को शरीक नहीं बनाता

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِنَّ تَرَنٍ أَنَا ۚ أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا ۚ وَوَلَدًا ۚ

और जब तू अपने बाग़ में आया तो (ये) क्यों न कहा कि ये सब (माशा अल्लाह खुदा ही के चाहने से हुआ है (मेरा कुछ भी नहीं क्योंकि) बग़ैर खुदा की (मदद) के (किसी में) कुछ सकत नहीं अगर माल और औलाद की राह से तू मुझे कम समझता है

فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي خَيْرًا ۚ ا مِنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا ۚ ا مِنْ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا ۚ ا زَلَقًا

तो अनक़ीरब ही मेरा परवरदिगार मुझे वह बाग़ अता फरमाएगा जो तेरे बाग़ से कहीं बेहतर होगा और तेरे बाग़ पर कोई ऐसी आफ़त आसमान से नाज़िल करे कि (खाक सियाह) होकर चटियल चिकना सफ़ाचट मैदान हो जाए

أَوْ يُصْبِحَ مَآوُهَا غَوْرًا ۚ ا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ ۚ ا طَلَبًا ۚ

उसका पानी नीचे उतर (के खुश्क) हो जाए फिर तो उसको किसी तरह तलब न कर सके

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ ۚ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا
وَيَقُولُ يُلَيْتَنِي لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي ۚ أَحَدًا ۚ

(चुनान्चे अज़ाब नाज़िल हुआ) और उसके (बाग़ के) फल (आफत में) घेर लिए गए तो उस माल पर जो बाग़ की तैयारी में
सर्फ (खर्च) किया था (अफसोस से) हाथ मलने लगा और बाग़ की ये हालत थी कि अपनी टहनियों पर औंधा गिरा हुआ पड़ा
था तो कहने लगा काश मैं अपने परवरदिगार का किसी को शरीक न बनाता

وَلَمْ تَكُن لَّهُ ۚ فِتْنَةٌ ۚ يَنصُرُونَهُ ۚ مِن دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا

और खुदा के सिवा उसका कोई जत्था भी न था कि उसकी मदद करता और न वह बदला ले सकता था इसी जगह से (साबित
हो गया

هُنَالِكَ الْوَلِيَّةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ ۚ ثَوَابًا ۚ وَخَيْرٌ عُقْبًا ۚ

कि सरपरस्ती खास खुदा ही के लिए है जो सच्चा है वही बेहतर सवाब (देने) वाला है और अन्जाम के जंगल से भी वही बेहतर
है

وَأَضْرَبَ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ ۚ نَبَاتُ
الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا ۚ تَذَرُوهُ الرِّيحُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا

और (ऐ रसूल) इनसे दुनिया की ज़िन्दगी की मसल भी बयान कर दो कि उसके हालत पानी की सी है जिसे हमने आसमान से
बरसाया तो ज़मीन की उगाने की ताकत उसमें मिल गई और (खूब फली फूली) फिर आखिर रेज़ा रेज़ा (भूसा) हो गई कि उसको
हवाएँ उड़ाए फिरती है और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبَاقِيَةُ الصَّلَاحُ ۚ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا ۚ
وَخَيْرٌ أَمَلًا ۚ

(ऐ रसूल) माल और औलाद (इस ज़रा सी) दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और बाकी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे परवरदिगार
के नज़दीक सवाब में उससे कहीं ज्यादा अच्छी हैं और तमन्नाएँ व आरजू की राह से (भी) बेहतर हैं

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۖ وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۗ۱

और (उस दिन से डरो) जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे और तुम ज़मीन को खुला मैदान (पहाड़ों से) खाली देखोगे और हम इन सभी को इकट्ठा करेंगे तो उनमें से एक को न छोड़ेंगे

وَعُرِضُوا ۚ عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا ۖ لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ
أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ۗ۱

सबके सब तुम्हारे परवरदिगार के सामने कतार पे कतार पेश किए जाएँगे और (उस वक्त हम याद दिलाएँगे कि जिस तरह हमने तुमको पहली बार पैदा किया था (उसी तरह) तुम लोगों को (आखिर) हमारे पास आना पड़ा मगर तुम तो ये ख्याल करते थे कि हम तुम्हारे (दोबारा पैदा करने के) लिए कोई वक्त ही न ठहराएँगे

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يُوَيْلَتَنَا مَا لَ هَذَا
الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً ۚ وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا ۚ وَوَجَدُوا ۚ مَا عَمِلُوا ۗ۱
حَاضِرًا ۗ۱ ۚ وَلَا يَظِلُّمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۗ۱

और लोगों के आमाल की किताब (सामने) रखी जाएँगी तो तुम गुनेहगारों को देखोगे कि जो कुछ उसमें (लिखा) है (देख देख कर) सहमे हुए हैं और कहते जाते हैं हाए हमारी यामत ये कैसी किताब है कि न छोटे ही गुनाह को बे कलमबन्द किए छोड़ती है न बड़े गुनाह को और जो कुछ इन लोगों ने (दुनिया में) किया था वह सब (लिखा हुआ) मौजूद पाएँगे और तेरा परवरदिगार किसी पर (ज़रा बराबर) ज़ुल्म न करेगा

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا ۚ لِآدَمَ فَسَجَدُوا ۗ۱ إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ
أَمْرِ رَبِّهِ ۗ۱ ۚ أَفَتَتَّخِذُونَهُ ۚ وَذُرِّيَّتَهُ ۚ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۗ۱ ۚ بِئْسَ
لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۗ۱

और (वह वक्त याद करो) जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया (ये इबलीस) जिन्नात से था तो अपने परवरदिगार के हुक्म से निकल भागा तो (लोगों) क्या मुझे छोड़कर उसको और उसकी औलाद को अपना दोस्त बनाते हो हालाँकि वह तुम्हारा (कदीमी) दुश्मन है ज़ालिमों (ने खुदा के बदले शैतान को अपना दोस्त बनाया ये उन) का क्या बुरा ऐवज़ है

۱ مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
الْمُضِلِّينَ عِزًّاۙ۱

मैने न तो आसमान व ज़मीन के पैदा करने के वक्त उनको (मदद के लिए) बुलाया था और न खुद उनके पैदा करने के वक्त और मै (ऐसा गया गुज़रा) न था कि मै गुमराह करने वालों को मददगार बनाता

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُواۙ شُرَكَآءِیَ الَّذِیْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ یَسْتَجِیْبُواۙ لَهُمْ وَجَعَلْنَا
بَیْنَهُمْ مَّوْبِقًاۙ۱

और (उस दिन से डरो) जिस दिन खुदा फरमाएगा कि अब तुम जिन लोगों को मेरा शरीक ख्याल करते थे उनको (मदद के लिए) पुकारो तो वह लोग उनको पुकारेंगे मगर वह लोग उनकी कुछ न सुनेंगे और हम उन दोनों के बीच में महलक (खतरनाक) आड़ बना देंगे

وَرَءَا الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّواۙ أَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ یَجِدُواۙ عَنْهَا مَصْرِفًاۙ۱

और गुनेहगार लोग (देखकर समझ जाएँगे कि ये इसमें सोके जाएँगे और उससे गरीज़ (बचने की) की राह न पाएँगे

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هَٰذَا الْقُرْءَانِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَیْءٍ
جَدَلًاۙ۱

और हमने तो इस कुरान में लोगों (के समझाने) के वास्ते हर तरह की मिसालें फेर बदल कर बयान कर दी है मगर इन्सान तो तमाम मखलूक़ात से ज्यादा झगड़ालू है

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ یُؤْمِنُواۙ إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدٰی وَیَسْتَغْفِرُواۙ رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِیَهُمْ سُنَّةٌ
الْأَوَّلِیْنَ أَوْ یَأْتِیَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًاۙ۱

और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो (फिर) उनको ईमान लाने और अपने परवरदिगार से मग़फ़िरत की दुआ माँगने से (उसके सिवा और कौन) अम्र मायने है कि अगलों की सी रीत रस्म उनको भी पेश आई या हमारा अज़ाब उनके सामने से (मौजूद) हो

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِالْبَاطِلِ
لِيُدْحِضُوا ۚ بِهِ الْحَقَّ ۚ وَاتَّخَذُوا ۚ آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا ۚ هُزُوًا ۚ

और हम तो पैगम्बरों को सिर्फ इसलिए भेजते हैं कि (अच्छों को निजात की) खुशखबरी सुनाएं और (बदों को अज़ाब से) डराएं और जो लोग काफिर हैं झूटी झूटी बातों का सहारा पकड़ के झगड़ा करते हैं ताकि उसकी बदौलत हक़ को (उसकी जगह से उखाड़ फेंकें और उन लोगों ने मेरी आयतों को जिस (अज़ाब से) ये लोग डराए गए हँसी दृढ़ता (मज़ाक) बना रखा है

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۚ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ
يَهْتَدُوا ۚ إِذَا أَبَدًا ۚ

और उससे बढ़कर और कौन ज़ालिम होगा जिसको खुदा की आयतें याद दिलाई जाए और वह उनसे रद गिरदानी (मुँह फेर ले) करे और अपने पहले करतूतों को जो उसके हाथों ने किए हैं भूल बैठे (गोया) हमने खुद उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि वह (हक़ बात को) न समझ सकें और (गोया) उनके कानों में गिरानी पैदा कर दी है कि (सुन न सकें) और अगर तुम उनको राहे रास्त की तरफ़ बुलाओ भी तो ये हरगिज़ कभी रुबरु होने वाले नहीं हैं

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا ۚ لَعَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَلْ لَهُمْ
مَوْعِدٌ ۚ لَّنْ يَجِدُوا ۚ مِنْ دُونِهِ ۚ مَوْئِلًا ۚ

और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है अगर उनकी करतूतों की सज़ा में धर पकड़ करता तो फौरन (दुनिया ही में) उन पर अज़ाब नाज़िल कर देता मगर उनके लिए तो एक मियाद (मुक़र्रर) है जिससे खुदा के सिवा कहीं पनाह की जगह न पाएंगे

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۚ وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۚ

और ये बस्तियाँ (जिन्हें तुम अपनी आँखों से देखते हो) जब उन लोगों ने सरकशी तो हमने उन्हें हलाक कर मारा और हमने उनकी हलाकत की मियाद मुक़र्रर कर दी थी

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتْنِهِ لَا أُبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا^۱

(ऐ रसूल) वह वाक्या याद करो जब मूसा खिज्र की मुलाकात को चले तो अपने जवान वसी यूशा से बोले कि जब तक में दोनों दरियाओं के मिलने की जगह न पहुँच जाऊँ (चलने से) बाज़ न आऊँगा

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ^۲ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا^۱

स्वाह (अगर मुलाकात न हो तो) बरसों यूँ ही चलता जाऊँगा फिर जब ये दोनों उन दोनों दरियाओं के मिलने की जगह पहुँचे तो अपनी (भुनी हुई) मछली छोड़ चले तो उसने दरिया में सुरंग बनाकर अपनी राह ली

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتْنِهِ ءَاتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا^۱

फिर जब कुछ और आगे बढ़ गए तो मूसा ने अपने जवान (वसी) से कहा (अजी हमारा नाश्ता तो हमें दे दो हमारे (आज के) इस सफर से तो हमको बड़ी थकन हो गई

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنَسْنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ^۲ ^۱ وَأَتَّخَذَ سَبِيلَهُ^۲ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا^۱

(यूशा ने) कहा क्या आप ने देखा भी कि जब हम लोग (दरिया के किनारे) उस पत्थर के पास ठहरे तो मैं (उसी जगह) मछली छोड़ आया और मुझे आप से उसका ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया और मछली ने अजीब तरह से दरिया में अपनी राह ली

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغُ^۱ ^۲ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا^۱

मूसा ने कहा वही तो वह (जगह) है जिसकी हम जुस्तजू (तलाश) में थे फिर दोनों अपने कदम के निशानों पर देखते देखते उलटे पाँव फिरे

فَوَجَدَا عَبْدًا^۱ ^۲ مِّنْ عِبَادِنَا ءَاتِيْنَهُ رَحْمَةً^۲ ^۱ مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِن لَّدُنَّا عِلْمًا^۱

तो (जहाँ मछली थी) दोनों ने हमारे बन्दों में से एक (खास) बन्दा खिज्र को पाया जिसको हमने अपनी बारगाह से रहमत (विलायत) का हिस्सा अता किया था

قَالَ لَهُ ۞ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَن تُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۞۱

और हमने उसे इल्म लदुन्नी (अपने खास इल्म) में से कुछ सिखाया था मूसा ने उन (खिज़्र) से कहा क्या (आपकी इजाज़त है कि) मैं इस ग़रज़ से आपके साथ साथ रहूँ

قَالَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۞۱

कि जो रहनुमाई का इल्म आपको है (खुदा की तरफ से) सिखाया गया है उसमें से कुछ मुझे भी सिखा दीजिए खिज़्र ने कहा (मैं सिखा दूँगा मगर) आपसे मेरे साथ सब्र न हो सकेगा

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ ۞۱ خُبْرًا ۞۱

और (सच तो ये है) जो चीज़ आपके इल्मी अहाते से बाहर हो

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا ۞۱ وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۞۱

उस पर आप सब्र क्योंकर कर सकते हैं मूसा ने कहा (आप इत्मिनान रखिए) अगर खुदा ने चाहा तो आप मुझे साबिर आदमी पाएँगे

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۞۱

और मैं आपके किसी हुक्म की नाफरमानी न करूँगा खिज़्र ने कहा अच्छा तो अगर आप को मेरे साथ रहना है तो जब तक मैं खुद आपसे किसी बात का ज़िक्र न छेड़ूँ

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۞۱ قَالَ أَخَرَقْتُهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۞۱

आप मुझसे किसी चीज़ के बारे में न पूछियेगा ग़रज़ ये दोनो (मिलकर) चल खड़े हुए यहाँ तक कि (एक दरिया में) जब दोनों कश्ती में सवार हुए तो खिज़्र ने कश्ती में छेद कर दिया मूसा ने कहा (आप ने तो ग़ज़ब कर दिया) क्या कश्ती में इस ग़रज़ से सुराख किया है

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۚ

कि लोगों को डुबा दीजिए ये तो आप ने बड़ी अजीब बात की है-खिज़्र ने कहा क्या मैंने आप से (पहले ही) न कह दिया था

قَالَ لَا تَأْخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۚ

कि आप मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगे-मूसा ने कहा अच्छा जो हुआ सो हुआ आप मेरी गिरफ्त न कीजिए और मुझ पर मेरे इस मामले में इतनी सख्ती न कीजिए

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَمًا ۖ فَتَقَاتَلَهُمَا ۖ قَالَ أَقْتَلْتُمْ نَفْسًا ۖ زَكِيَّةً ۖ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۖ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا نُكْرًا ۚ

(खैर ये तो हो गया) फिर दोनों के दोनों आगे चले यहाँ तक कि दोनों एक लड़के से मिले तो उस बन्दे खुदा ने उसे जान से मार डाला मूसा ने कहा (ऐ माज़ अल्लाह) क्या आपने एक मासूम शख्स को मार डाला और वह भी किसी के (खौफ के) बदले में नहीं आपने तो यक़ीनी एक अजीब हरकत की

ۚ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۚ

खिज़्र ने कहा कि मैंने आपसे (मुकर्रर) न कह दिया था कि आप मेरे साथ हरगिज़ नहीं सब्र कर सकेगें

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ ۖ بَعْدَهَا فَلَا تُصَحِّبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۚ

मूसा ने कहा (खैर जो हुआ वह हुआ) अब अगर मैं आप से किसी चीज़ के बारे में पूछगछ करूँगा तो आप मुझे अपने साथ न रखियेगा बेशक आप मेरी तरफ से माज़रत (की हद को) पहुँच गए

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلُهَا فَأَبَوْا ۖ أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا ۖ يُرِيدُ أَنْ يَنْقُضَ فَأَقَامَهُمَا ۖ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۚ

गरज़ (ये सब हो हुआ कर फिर) दोनों आगे चले यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों के पास पहुँचे तो वहाँ के लोगों से कुछ खाने को माँगा तो उन लोगों ने दोनों को मेहमान बनाने से इन्कार कर दिया फिर उन दोनों ने उसी गाँव में एक दीवार को देखा कि गिरा ही चाहती थी तो खिज़्र ने उसे सीधा खड़ा कर दिया उस पर मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो (इन लोगों से) इसकी मज़दूरी ले सकते थे

قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا

(ताकि खाने का सहारा होता) खिज़्र ने कहा मेरे और आपके दरमियान छुट्टम छुट्टा अब जिन बातों पर आप से सब्र न हो सका मैं अभी आप को उनकी असल हकीकत बताए देता हूँ

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ
مَلِكٌ ۚ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۚ

(लीजिए सुनिये) वह कश्ती (जिसमें मैंने सुराख कर दिया था) तो चन्द गरीबों की थी जो दरिया में मेहनत करके गुजारा करते थे मैंने चाहा कि उसे ऐबदार बना दूँ (क्योंकि) उनके पीछे-पीछे एक (ज़ालिम) बादशाह (आता) था कि तमाम कश्तियां ज़बरदस्ती बेगार में पकड़ लेता था

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا ۚ وَكُفْرًا ۚ

और वह जो लड़का जिसको मैंने मार डाला तो उसके माँ बाप दोनों (सच्चे) ईमानदार हैं तो मुझको ये अन्देशा हुआ कि (ऐसा न हो कि बड़ा होकर) उनको भी अपने सरकशी और कुफ्र में फँसा दे

فَأَرَدْنَا أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا ۚ ۚ إِنَّ مِنْهُ زَكَاةً ۚ وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۚ

तो हमने चाहा कि (हम उसको मार डाले और) उनका परवरदिगार इसके बदले में ऐसा फरज़न्द अता फरमाए जो उससे पाक नफ़सी और पाक कराबत में बेहतर हो

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ ۚ كَنْزٌ ۚ لَهُمَا وَكَانَ
أَبُوهُمَا صَالِحًا ۚ ۚ فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً ۚ ۚ مِنْ
رَبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ ۚ ۚ عَنْ أَمْرِ ۚ ۚ ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۚ ۚ

और वह जो दीवार थी (जिसे मैंने खड़ा कर दिया) तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उसके नीचे उन्हीं दोनों लड़कों का खज़ाना (गड़ा हुआ था) और उन लड़कों का बाप एक नेक आदमी था तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँचे तो तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से अपना खज़ाने निकाल ले और मैंने (जो कुछ किया) कुछ अपने एख्तियार से नहीं किया (बल्कि खुदा के हुक्म से) ये हकीकत है उन वाक्यात की जिन पर आपसे सब्र न हो सका

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُوا ۖ عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا

और (ऐ रसूल) तुमसे लोग जुलकरनैन का हाल (इस्तेहान) पूछा करते हैं तुम उनके जवाब में कह दो कि मैं भी तुम्हें उसका कुछ हाल बता देता हूँ

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ ۖ فِي الْأَرْضِ وَءَاتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ سَبَبًا ۖ

(खुदा फरमाता है कि) बेशक हमने उनको ज़मीन पर कुदरतें हुकूमत अता की थी और हमने उसे हर चीज़ के साज़ व सामान दे रखे थे

فَاتَّبَعَ سَبَبًا

वह एक सामान (सफर के) पीछे पड़ा

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا

قَوْمًا ۖ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ ۖ إِمَّا أَنْ تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۖ

यहाँ तक कि जब (चलते-चलते) आफताब के गुरुब होने की जगह पहुँचा तो आफताब उनको ऐसा दिखाई दिया कि (गोया) वह काली कीचड़ के चश्में में डूब रहा है और उसी चश्में के करीब एक क्रौम को भी आबाद पाया हमने कहा ऐ जुलकरनैन (तुमको एख्तियार है) ख्वाह इनके कुफ़्र की वजह से इनकी सज़ा करो (कि ईमान लाए) या इनके साथ हुस्ने सुलूक का शेवा एख्तियार करो (कि खुद ईमान कुबूल करें)

قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ۖ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ ۖ فَيُعَذِّبُهُ ۖ عَذَابًا ۖ نُكَرًّا ۖ

जुलकरनैन ने अर्ज़ की जो शख्स सरकशी करेगा तो हम उसकी फौरन सज़ा कर देंगे (आखिर) फिर वह (क़यामत में) अपने परवरदिगार के सामने लौटाकर लाया ही जाएगा और वह बुरी से बुरी सज़ा देगा

وَأَمَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ فَلَهُ ۖ جَزَاءٌ ۖ الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ ۖ مِنْ أَمْرِنَا

يُسْرًا ۖ

और जो शख्स ईमान कुबूल करेगा और अच्छे काम करेगा तो (वैसा ही) उसके लिए अच्छे से अच्छा बदला है और हम बहुत जल्द उसे अपने कामों में से आसान काम (करने) को कहेंगे

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا

फिर उस ने एक दूसरी राह एख्तियार की

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ ۖ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُم مِّن دُونِهَا
سِتْرًا ۚ

यहाँ तक कि जब चलते-चलते आफताब के तूलूउ होने की जगह पहुँचा तो (आफताब) से ऐसा ही दिखाई दिया (गोया) कुछ लोगों के सर पर उस तरह तुलूउ कर रहा है जिन के लिए हमने आफताब के सामने कोई आड़ नहीं बनाया था

كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۚ

और था भी ऐसा ही और जुलकरनैन के पास वो कुछ भी था हमको उससे पूरी वाकफ़ियत थी

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا

(गरज) उसने फिर एक और राह एख्तियार की

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۖ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۚ

यहाँ तक कि जब चलते-चलते रोम में एक पहाड़ के (कंगुरों के) दीवारों के बीच पहुँच गया तो उन दोनों दीवारों के इस तरफ एक क्रौम को (आबाद) पाया तो बात चीत कुछ समझ ही नहीं सकती थी

قَالُوا ۚ يٰۤاَلْقَرْنَيْنِ ۖ اِنَّ يَاجُوجَ وَمَاجُوجَ مُفْسِدُونَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ
خَرْجًا عَلٰى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۚ

उन लोगों ने मुतरज्जिम के ज़रिए से अर्ज की ऐ जुलकरनैन (इसी घाटी के उधर याजूज माजूज की क्रौम है जो) मुल्क में फ़साद फैलाया करते हैं तो अगर आप की इजाज़त हो तो हम लोग इस गर्ज से आपसे पास चन्दा जमा करें कि आप हमारे और उनके दरमियान कोई दीवार बना दें

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ ۖ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا

जुलकरनैन ने कहा कि मेरे परवरदिगार ने खर्च की जो कुदरत मुझे दे रखी है वह (तुम्हारे चन्दे से) कहीं बेहतर है (माल की ज़रूरत नहीं) तुम फ़क़त मुझे क़ूवत से मदद दो तो मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक रोक बना दूँ

ءَاتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ أَنفُخُوا ۖ ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ ءَاتُونِي ۖ أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۖ

(अच्छा तो) मुझे (कहीं से) लोहे की सिले ला दो (चुनान्चे वह लोग) लाए और एक बड़ी दीवार बनाई यहाँ तक कि जब दोनो कंगूरो के दरमेयान (दीवार) को बुलन्द करके उनको बराबर कर दिया तो उनको हुक्म दिया कि इसके गिर्द आग लगाकर धौको यहां तक उसको (धौकते-धौकते) लाल अंगारा बना दिया

فَمَا أَسْطَعُوا ۖ أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا أَسْتَطَعُوا ۖ لَهُ ۖ نَقَبٌ ۖ

तो कहा कि अब हमको ताँबा दो कि इसको पिघलाकर इस दीवार पर उँडेल दें (गरज़) वह ऐसी ऊँची मज़बूत दीवार बनी कि न तो याजूज व माजूज उस पर चढ़ ही सकते थे और न उसमें नक़ब लगा सकते थे

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ ۖ مِّنْ رَبِّي ۖ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۖ

जुलकरनैन ने (दीवार को देखकर) कहा ये मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है मगर जब मेरे परवरदिगार का वायदा (क़यामत) आयेगा तो इसे ढहा कर हमवार कर देगा और मेरे परवरदिगार का वायदा सच्चा है

ۖ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ ۖ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۖ

और हम उस दिन (उन्हें उनकी हालत पर) छोड़ देंगे कि एक दूसरे में (टकरा के दरिया की) लहरों की तरह गुड़मुड़ हो जाएँ और सूर फूँका जाएगा तो हम सब को इकट्ठा करेंगे

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا

और उसी दिन जहन्नुम को उन काफ़िरों के सामने खुल्लम खुल्ला पेश करेंगे

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا

और उसी (रसूल की दुश्मनी की सच्ची बात) कुछ भी सुन ही न सकते थे

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَنْ يَتَّخِذُوا ۚ عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۚ

तो क्या जिन लोगों ने कुफ़र एख्तियार किया इस ख्याल में हैं कि हमको छोड़कर हमारे बन्दों को अपना सरपरस्त बना लें (कुछ पूछगछ न होगी) (अच्छा सुनो) हमने काफिरों की मेहमानदारी के लिए जहन्नुम तैयार कर रखी है

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या हम उन लोगों का पता बता दें जो लोग आमाल की हैसियत से बहुत घाटे में हैं

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا

(ये) वह लोग (हैं) जिन की दुनियावी ज़िन्दगी की राई (कोशिश सब) अकारत हो गई और वह उस ख़ाम ख्याल में हैं कि वह यकीनन अच्छे-अच्छे काम कर रहे हैं

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ ۚ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَمَةِ وَزَنًّا ۚ

यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयातों से और (क़यामत के दिन) उसके सामने हाज़िर होने से इन्कार किया तो उनका सब किया कराया अकारत हुआ तो हम उसके लिए क़यामत के दिन मीज़ान हिसाब भी क़ायम न करेंगे

ذَلِكَ جَزَاءُهُمْ جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوا ۚ وَاتَّخَذُوا ۚ آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُؤًا

(और सीधे जहन्नुम में झोंक देंगे) ये जहन्नुम उनकी करतूतों का बदला है कि उन्होंने कुफ़र एख्तियार किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को हँसी ठट्ठा बना लिया

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किये उनकी मेहमानदारी के लिए फिरदौस (बरी) के बागात होंगे जिनमें वह हमेशा रहेंगे

خُلْدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۖ

और वहाँ से हिलने की भी ख्वाहिश न करेंगे

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا ۖ لَكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنفَدَ كَلِمَتُ رَبِّي وَلَوْ جُنَّا بِمِثْلِهِ ۚ مَدَدًا ۖ

(ऐ रसूल उन लोगों से) कहो कि अगर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) वास्ते समन्दर (का पानी) भी सियाही बन जाए तो कबल उसके कि मेरे परवरदिगार की बातें खत्म हों समन्दर ही खत्म हो जाएगा अगरचे हम वैसा ही एक समन्दर उस की मदद को लाँए

قُلْ إِنَّمَا أَنَا ۖ بَشَرٌ ۖ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ ۖ وَحِدٌ ۖ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا ۚ لِقَاءَ رَبِّهِ ۖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا ۖ صَالِحًا ۖ وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ ۚ أَحَدًا ۖ

(ऐ रसूल) कह दो कि मैं भी तुम्हारा ही ऐसा एक आदमी हूँ (फर्क इतना है) कि मेरे पास ये वही आई है कि तुम्हारे माबूद यकता माबूद हैं तो वो शख्स आरज़ूमन्द होकर अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होगा तो उसे अच्छे काम करने चाहिए और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न करें